AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

शिवराजविजय में अलङ्कार योजना की समीक्षा

ORIGINAL ARTICLE

Author

परमानन्द कुमार,
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

शोध सार

पण्डित अम्बिकादत्त व्यास आधुनिक संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनकी लिखित रचना शिवराजविजय, शिवाजी के जीवनचरित और महाराष्ट्र की स्वतन्त्रता से सम्बन्धित है। शिवराजविजय में कुल बारह निःश्वास हैं। प्रत्येक निःश्वास पण्डित अम्बिकादत्तव्यास जी की अद्भुत कल्पना का संयोजन है। इस सन्दर्भ में पण्डित अम्बिकादत्तव्यास जी का आलङ्कारिक विधान इस ग्रन्थ में देखने को मिलता है। कवि व्यास जी अपने विभिन्न अलङ्कारों के माध्यम से इस ग्रन्थ को सजाया है जिससे इस ग्रन्थ की प्रासङ्गिकता दिनानुदिन बढ़ती जा रही है। राष्ट्र के लिए समर्पित इस ग्रन्थ में आलङ्कारिक विधान एक अद्भुत सौन्दर्य का निदर्शन कराता है।

मुख्य शब्द

कविताकामिनी, चित्ताकर्षक, उपन्यास, संयोजन, दृष्टिगोचार, वक्तव्य.

राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत पण्डित अम्बिकादत्तव्यास के द्वारा लिखित 'शिवराजविजय' 3 विरामों में विभक्त है। प्रत्येक विराम में 4 निःश्वास हैं। अतः कुलमिलाकर 12 निःश्वासों में यह ग्रन्थ रचित है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है जिसमें महाराष्ट्रशिरोमणि श्री शिवाजी महाराज का जीवनचरित है। इस ग्रन्थ का प्रतिनायक औरंगजेब है। सभी पात्रों में से कुछ ऐतिहासिक हैं और कुछ काल्पनिक हैं। इस काव्य की भाषा, रस, अलङ्कार, रीति आदि महाकवि बाण के काव्य जैसा प्रतीत होता है। अलङ्कार योजना में भी पण्डित व्यास जी ने अपनी उत्कृष्टता का प्रदर्शन किया है।

वस्तुतः कविता कामिनी का शृङ्गार है– अलङ्कार योजना। जिस प्रकार आभूषण से नारी का सौन्दर्य बढ़ जाता है उसी प्रकार अलङ्कार से काव्य का चमत्कार एवं हृदय संवेद्यता बढ़ जाती है। अनलङ्कृत भाषा एवं रमणी दोनों चित्ताकर्षक नहीं होते। कुछ अर्थालङ्कार तो इतने महत्त्वपूर्ण है कि उनके विधान से काव्य के सर्वस्व वे ही प्रतीत होने लगते हैं। इस कारण तो कुछ अलङ्कारवादियों ने अलङ्कार को ही काव्य की आत्मा मानना प्रारम्भ कर दिया। कुछ भी हो, काव्य में अलङ्कार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अलङ्कार के अभाव में कोई भी काव्य श्रेष्ठता को प्राप्त होने में समर्थ नहीं हो सकता।

यद्यपि व्यास जी के सम्मुख साहित्यिक संस्कृत गद्य का अलङ्कृत रूप ही निदर्शन हेतु उपलब्ध था, तथापि वह उपन्यास में अलङ्कारों के अधिक प्रयोग के समर्थक न थे। शिवराजविजय में अलङ्कारों का उतना ही प्रयोग

पं० व्यास जी को इष्ट है जितने से वह गद्यकाव्य के सहज और नैसर्गिक प्रवाह को बाधा न पहुँचा सके। यही कारण है कि पं० व्यास जी ने अपनी सुरभारती को एक सुन्दर रमणी की भाँति अलङ्कृत किया है। शिवराजविजय में रस और वातावरण के अनुरूप ही समुचित एवं अनुकूल अलङ्कार का संयोजन किया है। बाणभट्ट की कृति अलङ्कार भार से बोझिल प्रतीत होती है किन्तु व्यास जी की कृति कहीं भी अलङ्कार भार से दबी हुई दिखाई नहीं देती। पं० व्यास जी शब्दालङ्कार तथा अर्थालङ्कार दोनों का सावसर प्रयोग किया है। शब्दालङ्कार तो पदे–पदे दृष्टिगोचर होता हैः–

[1]

यत्र तत्र यमक अलङ्कार का प्रयोग भी पं० व्यास जी ने किया हैः–

"विलक्षणोऽयं भगवान् सकलकलाकलापकलनः सकलकालनः करालः कालः।"[2]

उत्प्रेक्षा अलङ्कार कवि की कल्पना का बहुत बड़ा सम्बल होता है। बाण की तरह पं० व्यास जी ने भी उत्प्रेक्षा की पर्याप्त संयोजना की हैः–

"अस्यैव प्रपौत्रो मूर्तिमदिव कलियुगं, गृहीतविग्रह इव चाधर्मः, आलमगीरोपाधिधारी अवरङ्गजीवः सम्प्रति दिल्लीवल्लभतां कलङ्कयति।"[3]

अलङ्कारों की माला में उपमा सुमेरू के समान है इसीलिए अलङ्कारों में इसे प्रमुख माना जाता है, क्योंकि उपमा एक प्रकार से वक्तव्य के कहने का ढंग है, जिसका सर्वाधिक व्यवहार होता है। उपमा का प्रयोग भी पं० व्यास जी ने सरस तथा स्वाभाविक रूप में किया हैः–

"तावद् वयं श्येना इव शकुनिमण्डले महाराष्ट्रसेनायां, छिन्ध, भिन्धि– इति कृत्वा युगपदेव पतिष्यामः, वसन्तवाताहतनीरसच्छदानिव च क्षणेन विद्रावयिष्यामः।"4

चित्तौड़गढ़ की स्त्रियों के वर्णन में श्लेष गर्भित विरोधाभास द्वारा अत्यन्त सुन्दर चित्रण किया गया हैः– "क्षत्रिय–कुलाङ्गनाः, कमला इव विमलाः, शारदा इव विशारदाः, अनुसूया इवाऽनुसूयाः, यशोदा इव यशोदाः, सत्या इव सत्याः, रूक्मिण्यः इव रूक्मिण्यः, सुवर्णा इव सुवर्णाः सत्य इव सत्यः।"[5]

सुबन्धु और बाण के श्लिष्ट और अश्लिष्ट विरोधाभास बहुत प्रसिद्ध हैं। पं० व्यास जी के विरोधाभास भी उसी श्रेणी में रखे जा सकते हैं। शिवाजी के स्वरूप का यह विरोधाभास द्रष्टव्य हैः–

"खर्वामप्यखर्व पराक्रमां श्यामामपि यशः समूह–श्वेतीकृतत्रिभुवनाम्, कुशासनाश्रयामपि सुशासनाश्रयां पठन पाठनादि परिश्रमानभिज्ञामपि नीतिनिष्णातां, स्थूल–दर्शनामपि सूक्ष्मदर्शनां ध्वंसकाण्डव्यसनिनीमपि धर्मधौरेयी कठिनामपि कोमलां उग्रामपि शान्तां शोभितविग्रहामपि दृढ़सन्धिबन्धां कलितगौरवामपि कलितलाघवां विशाललललाटां प्रचण्डबाहुदण्डां कम्बुग्रीवां मूर्तिं दर्शं परं प्रसादमासादयन्तस्तस्य वयस्याः कटानध्यवसन्।"[6]

उल्लेखालङ्कार हेतु प्रथम निःश्वास में योगिराज का यह वर्णन द्रष्टव्य हैः–

"महामुनिरेकः समाधौतिष्ठति स्म। तं केचित् कपिल इति, अपरे लोमश इति, इतरे जैगीषण्य इति, अन्ये च मार्कण्डेय इति विश्वसन्ति स्म।"[7]

उपमेय की अधिक प्रतिष्ठा करते हुए उपमान का जब तिरस्कार कर दिया जाता है वहाँ प्रतीप अलङ्कार होता है। सौवर्णी के रूप वर्णन में प्रतीप अलङ्कार का सुन्दर उदाहरण द्रष्टन्य है– "सेयं वर्णेन सुवर्णम्, कलरवेन पुंस्कोकिलान्, कैशैः रोलकदम्बान्, ललाटेन कलाधर–कलाम्, लोचनाभ्यां खञ्जनान् ..... किञ्चिद् गायति।[8]

निष्कर्ष

पं० व्यास जी ने इसके अतिरिक्त उदात्त, दीपक, यथासङ्ख्य आदि अलङ्कारों की भी योजना की है, किन्तु शिवराजविजय के अध्ययन से पता चलता है कि पं० व्यास जी ने अलङ्कारों का प्रयोग एकमात्र अपने गद्यकाव्य

को सजाने के उद्देश्य से ही किया है। फलतः इनका काव्य अलङ्कार भार से बोझिल नहीं होने पाया है।

सन्दर्भ सूची

1. मिश्र, रमाशङ्कर, *'शिवराजविजयः',* चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2018 ई०, विराम/निःश्वास–1/1, पृ० 10.
2. तत्रैव – 1/1, पृ० 50.
3. तत्रैव – 1/1, पृ० 69.
4. तत्रैव – 1/2, पृ० 167.
5. तत्रैव – 1/3, पृ० 261.
6. तत्रैव – 1/2, पृ० 130.
7. तत्रैव – 1/1, पृ० 17.
8. तत्रैव – 1/4, पृ० 368.

––==00==––